बिजली-पानी की किल्लत: साफ नीति, तकनीक से ही हल संभव

■ **दिल्ली में** बिजली और पानी की समस्या को लेकर हमारे गेस्ट एडिटर और वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल का मानना है कि यह असल में टेक्नॉलजी की कमी की समस्या है। उनका कहना है कि दुनिया के कई देशों में पानी को बड़े स्तर पर रिसाइकल किया जाता है, लेकिन भारत में अभी इस दिशा में बहुत काम करने की जरूरत है। अगर बेहतर तकनीक अपनाई जाए तो इस्तेमाल किए गए पानी को फिर से उपयोग में लाया जा सकता है और संकट काफी हद तक कम हो सकता है।

बिजली के मामले में वे कहते हैं कि रिन्यूएबल एनर्जी (जैसे सोलर और विंड) भविष्य है और तेजी से बढ़ रही है, लेकिन इसके साथ-साथ कोयले की अहमियत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उनका कहना है कि भारत के पास जो कोयला है, वह काफी हद तक सल्फर-फ्री है और उससे निकलने वाली राख का भी दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे कई दूसरी चीजें बनाई जा सकती हैं।

अनिल अग्रवाल के मुताबिक, हमें विदेशी सोच से जल्दी प्रभावित होने के बजाय अपनी जरूरतों के हिसाब से फैसले लेने चाहिए। देश में थर्मल पावर प्लांट्स को बढ़ावा देना अभी भी जरूरी है। इसके साथ ही नए पावर प्रोजेक्ट्स लगाने, ट्रांसमिशन नेटवर्क मजबूत करने और बिजली के वितरण (डिस्ट्रिब्यूशन) को बेहतर बनाने पर भी ध्यान देना होगा।

वह मानते हैं कि बिजली संकट की एक बड़ी वजह पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर के बीच असमंजस है। सरकार को साफ फैसला लेना होगा, या तो बिजली सेक्टर को पूरी तरह सरकारी कंपनियों जैसे पीजीसीआई और एनटीपीसी के जरिए चलाया जाए या फिर इसे निजी कंपनियों को सौंप दिया जाए। उनका कहना है कि जब तक यह स्पष्टता नहीं होगी, तब तक समस्या बनी रहेगी।